डॉ. जॉन ओसवाल्ट, निर्गमन, सत्र 10, निर्गमन 19-20

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं जो निर्गमन की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 10, निर्गमन 19-20 है।

आप सभी को देखकर बहुत अच्छा लगा। आने के लिए धन्यवाद। मुझे कुछ मिनट पहले रूथ मिशेल पर एक रिपोर्ट मिली। नहीं, वह कार्डिनल हिल में है, उसने आज अपनी चिकित्सा शुरू की और लोगों को बताया कि उसके पास कुछ घंटे हैं जब वह चिकित्सक से मिलने जाती है, लेकिन वह अपने कमरे में अपने व्यायाम करेगी, बेशक। और जब वह गिर गई तो उसके मुंह से निकले पहले शब्द जो अच्छे शब्द मैंने सुने थे, वे थे, मैं बाइबल अध्ययन में नहीं जा पाऊँगी। कितनी अच्छी महिला है।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें। पिता, हम आपके द्वारा हमारे प्रति की गई भलाई के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आपके द्वारा हम पर बरसाए गए आशीर्वाद के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आपको रूथ मिशेल जैसे उदाहरण के आशीर्वाद के लिए धन्यवाद देते हैं। उसके लिए धन्यवाद। उसकी वफादारी के लिए धन्यवाद। आपके और आपके वचन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद।

और हम प्रार्थना करते हैं कि आप उस पर आशीर्वाद दें कि वह जल्द से जल्द ठीक हो जाए और हम फिर से उसकी उपस्थिति का आशीर्वाद पा सकें। पिता, हम में से प्रत्येक को आपके आशीर्वाद का अनुभव करने के सभी तरीकों के लिए धन्यवाद। हमें क्षमा करें जब हम अपनी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं और आपकी अनदेखी देखभाल को भूल जाते हैं जो हम पर बरसती है और जिसे हम बस हल्के में लेते हैं।

धन्यवाद प्रभु। इसके लिए अब आपका धन्यवाद; आपके वचन के इर्द-गिर्द एक घंटा बिताने का यह एक और अवसर है। हे प्रभु, कृपया हमें इसकी सच्चाई बताएं, ताकि हम आपकी और आपकी दुनिया की सेवा करने के लिए जी सकें। आपके नाम में, आमीन।

ठीक है, हम आज शाम अध्याय 19 और अध्याय 20 के पहले भाग को देख रहे हैं। जाहिर है, अध्याय 20 का पहला भाग सामग्री से भरा हुआ है, और हम इस सर्वेक्षण में केवल इसे ही छूएंगे, लेकिन हम कम से कम इसे छूने की कोशिश करेंगे।

पृष्ठभूमि पर ध्यान दें, पृष्ठभूमि पर दूसरा तत्व। बाइबिल की वाचा उन वाचाओं के स्वरूप का अनुसरण करती है जिनका उपयोग किया जाता है, जो पूरे निकट पूर्व में उपयोग की जाती थीं। यह एक महान राजा, एक सम्राट अगर आप चाहें तो, और एक अधीन लोगों के बीच एक वाचा थी।

यह एक परिचय से शुरू होता है, जो आम तौर पर बताता है कि राजा कौन है और लोग कौन हैं, हालांकि यह सिर्फ यह बता सकता है कि लोग कौन हैं और राजा कौन है। दूसरा एक ऐतिहासिक

प्रस्तावना है, जो बताता है कि इस वाचा को संभव बनाने के लिए क्या हुआ है। अब, इस तरह की वाचाओं में, आम तौर पर, ऐतिहासिक घटना यह थी कि राजा आया और उन्हें कोड़े मारे, और वे एक पीटे हुए लोग थे, और राजा अब, अपनी महान, महान दयालुता में कहता है, मैं तुम्हारे साथ एक वाचा बनाना चाहता हूँ।

उनके पास बहुत कम विकल्प थे। हम बाइबल के लिए एक बहुत ही अलग ऐतिहासिक प्रस्तावना देखेंगे। फिर शर्तें आती हैं, वाचा के दोनों पक्ष किस बात पर सहमत होते हैं।

और फिर इस राजनीतिक वाचा के रूप में फिर से आता है, जिसका उपयोग किया जाता है, गवाह। माफ़ कीजिए। नहीं, अगला सवाल आम तौर पर यह होता है कि पाठ के साथ क्या करना है।

इस वाचा का पाठ कहाँ रखा जाना चाहिए? आम तौर पर, इसे प्रजा के मुख्य मंदिर में रखा जाना चाहिए। फिर दिव्य गवाहों की एक सूची आती है, सभी देवता जिन्हें इस वाचा का गवाह बनने के लिए बुलाया जाता है। और अंत में, आशीर्वाद और शापों की एक सूची, जो इसके बाद आती है।

यदि आप वाचा का पालन करते हैं, तो ये आशीर्वाद हैं। यदि आप वाचा को तोड़ते हैं, तो ये अभिशाप हैं। अब, यह दिलचस्प है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक काफी हद तक इस पैटर्न के अनुरूप है, लेकिन निर्गमन के अध्याय 20, 21, 22, 23 और 24 भी काफी नाटकीय रूप से इसके अनुरूप हैं।

बारे में हमने बात की है, उसकी रूपरेखा में अध्याय 19 वाचा की तैयारी है। यह एक बहुत ही गंभीर क्षण है।

परमेश्वर इन लोगों के साथ कम से कम 400 वर्षों से काम कर रहा है। अब्राहम के समय से लेकर अब तक 150 वर्ष या 550 वर्ष पहले तक। परमेश्वर धीरे-धीरे उन्हें इस बिंदु तक ले आया है।

क्या वे इस वाचा को स्वीकार करेंगे? क्या वे परमेश्वर के साथ एक बंधनकारी संबंध में प्रवेश करेंगे? बुतपरस्ती प्रतिबद्धता के बारे में नहीं है। यह यथासंभव कम प्रतिबद्धता है, और अधिकतम जोर इस बात पर है कि आप देवताओं को नियंत्रित करने के लिए क्या कर सकते हैं ताकि वे आपको आशीर्वाद दें। यह मौलिक रूप से अलग है क्योंकि परमेश्वर इन लोगों को एक ऐसे रिश्ते में आमंत्रित कर रहा है जहाँ वे खुद को उसके प्रति प्रतिबद्ध करते हैं, लेकिन वह भी खुद को उनके प्रति प्रतिबद्ध करता है।

तो, यह एक महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण क्षण है, और हम इस शाम को इस तैयारी के बारे में बात करने में काफी समय बिताएंगे। फिर, अध्याय 20 से 23 वाचा की प्रस्तुति है, जहाँ वाचा की शर्तें रखी गई हैं, और फिर अध्याय 24 वाचा की मुहर है, वाचा समारोह जिसमें लोग वाचा को स्वीकार करते हैं और इसे रखने के लिए सहमत होते हैं। तो, पुस्तक के इस भाग में, हमने अध्याय 1 से 15 के बारे में परमेश्वर की शक्ति के रहस्योद्घाटन के रूप में बात की।

अध्याय 16, 17 और 18, हमने इसे क्या कहा? किसी को याद है? शायद मैं आखिरकार ट्रक चलाना सीख जाऊँगा। उसकी नियति का रहस्योद्घाटन। उस महिला को एक गोल्ड स्टार दें।

यह उसकी कृपा का प्रकटीकरण है। भगवान परवाह करते हैं। हाँ, उनके पास शक्ति है।

हाँ, वह पृथ्वी पर सबसे महान ईश्वर है, पृथ्वी पर एकमात्र ईश्वर है, लेकिन यह शक्तिशाली ईश्वर अपने लोगों की भी परवाह करता है। अब , हमें उसके व्यक्तित्व या उसके सिद्धांतों का रहस्योद्घाटन मिल रहा है। यह शक्तिशाली, भविष्यवक्ता किस तरह का ईश्वर है? और वाचा के कार्यों में से एक, यह बहुत स्पष्ट हो जाता है।

हमारे पास ऐसी 14 या 15 वाचाएँ हैं। यह बिलकुल स्पष्ट है कि विभिन्न वाचाओं में निहित शर्तें महान राजा के चरित्र, उद्देश्यों और इच्छाओं को दर्शाती हैं। इनमें से एक राजा, उसकी हर वाचा में कोई व्यभिचार नहीं है।

दिलचस्प है। आप आश्चर्य करते हैं कि उस व्यक्ति के जीवन में वास्तव में क्या चल रहा है, लेकिन फिर हम जो देख रहे हैं, वह इस वाचा में, परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव का रहस्योद्घाटन है। इसलिए, भजन संहिता को ध्यान में रखते हुए, यह उसके उद्देश्य, उसके व्यक्तित्व, उसके सिद्धांतों का रहस्योद्घाटन है।

ठीक है, यह सब कहने के बाद, आइए अब देखें। इस सामग्री के बारे में कोई सवाल या टिप्पणी? हाँ। हाँ, यह अभिशापों के आशीर्वाद में शामिल है।

हाँ.हाँ.ठीक है.

अध्याय 19 तो तैयारी है। पहली आयत में जो आरंभिक तिथि दी गई है वह क्या है? तीसरा महीना। तीसरा महीना किससे शुरू होता है? फसह से।

फसह का पर्व पहले महीने के 14वें दिन मनाया गया। इसलिए अब तीसरे महीने के पहले दिन वे सिनाई पहुँचते हैं। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि यह फसह का पर्व है जब परमेश्वर मृत्यु से मुक्ति देता है, और यह प्रथम फलों के पर्व के समय होता है या चूँकि यह 50 दिन बाद होता है, पिन्तेकुस्त, और पिन्तेकुस्त का संबंध 50 दिनों से है।

तो, इस तीसरे महीने में यहाँ क्या होने जा रहा है? वे टोरा प्राप्त करने जा रहे हैं जो उनके चरित्र का रहस्योद्घाटन है। इसलिए, यहूदियों के लिए, जैसे-जैसे वे अधिक शहरीकृत और कम ग्रामीण होते गए, यह पर्व उतना फसल उत्सव नहीं रह गया जितना कि यह शुरुआत में था। आपने जौ की फ़सल काट ली थी और आप गेहूँ की फ़सल शुरू कर रहे थे।

तो, यह एक दिवसीय उत्सव जो काटा गया था उसके लिए धन्यवाद का उत्सव था और जो काटा जाने वाला था उसके लिए विश्वास का उत्सव था। लेकिन मैं कहता हूँ कि जैसे-जैसे वे कम ग्रामीण और थोड़े अधिक शहरीकृत होते गए, धीरे-धीरे पेंटेकोस्ट का यह पर्व टोरा देने का उत्सव बन गया। अब, इसके बारे में सोचें।

ईस्टर किस बारे में है? मृत्यु से मुक्ति। मेम्ना पृथ्वी की नींव से ही मारा जाता है। और पिन्तेकुस्त किस बारे में है? पवित्र आत्मा का दिया जाना।

1400 वर्षों के बाद आखिरकार यह सक्षमता मिली। टोरा को बनाए रखने की सक्षमता। और इसलिए आप समझ सकते हैं कि पॉल क्या कर रहा है जब अध्याय 6 में वह कहता है कि एक मसीही के रूप में जो फिर से जन्मा है, मृतकों में से जी उठा है, आपको पाप करना छोड़ना होगा।

लेकिन आप खुद से पाप करना नहीं छोड़ सकते। मैं जानता हूँ, वह कहता है। मैं उस स्थिति से गुज़रा हूँ।

मैंने ऐसा किया है। इसलिए अब उन लोगों पर कोई दंड नहीं है जो शरीर के अनुसार नहीं चलते बल्कि आत्मा के अनुसार चलते हैं। पिन्तेकुस्त आ गया है।

1400 सालों से हम यहूदी टोरा को अपनी ताकत से बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं और ऐसा नहीं कर पा रहे हैं। मुझे यह बहुत पसंद है। यह हमें परिभाषित करता है।

यह हमें वह बनाता है जो हम हैं। और हम ऐसा नहीं कर सकते। यह हमें हर कदम पर नुकसान पहुँचाता है।

लेकिन अब वादा पूरा हो चुका है। पवित्र आत्मा हमें सक्षम बनाने के लिए आया है। इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन आया, न कि तीन दिन बाद या चार दिन पहले।

उस दिन। उस दिन जब उसका आना तोरा की पूर्ति है। ठीक है।

पद 2. वहाँ, इस्राएल ने पहाड़ के सामने डेरा डाला। अध्याय 3, पद 12, हमें क्या बताता है? परमेश्वर ने कहा कि यह एक संकेत होगा। तुम मेरे लोगों को मिस्र से बाहर लाओगे, और वे इस पहाड़ पर मेरी आराधना करेंगे।

आपको क्या लगता है कि जब वे उस पहाड़ पर पहुँचे तो मूसा को कैसा महसूस हुआ होगा? निश्चित। परमेश्वर की वफ़ादारी का गहरा, गहरा एहसास। परमेश्वर ने अपने वादे पूरे किए हैं।

हाँ। हाँ। तो फिर, जैसा कि हमने पहले भी कहा है, यह स्पष्ट नहीं है कि कितने हिब्रू लोगों ने वास्तव में पलायन और समुद्र पार करने और रेगिस्तान के माध्यम से यात्रा के सबक सीखे।

लेकिन मूसा ने ऐसा किया। मूसा को यह बात समझ में आ गई। और यह पुष्टि का एक महान क्षण रहा होगा।

क्या यहाँ किसी के पास ऐसा अनुभव है जिसे आप साझा करना चाहेंगे? जब ईश्वर ने आपको मार्गदर्शन दिया और आपको विश्वास के साथ आगे बढ़ना पड़ा और फिर बाद में उन्होंने इसकी पुष्टि की? खैर, जब मैं अभी भी सेवा में था और मैं उस एसजे ड्यूटी पर था और शायद भगवान ने कहा कि अब आपके लिए इस्तीफा देने और सेना से बाहर आने का समय आ गया है। मेरे पास आपके लिए एक जगह है। मैं चाहता हूँ कि आप वहाँ जाएँ।

उस समय, मुझे लगा कि वह सेमिनरी कह रहा है। वह कह रहा था कि वह पूर्णकालिक पादरी मंत्रालय में नहीं था, बल्कि शिक्षण में था। और इसलिए, यह एस्बरी था, और यहीं से इसकी शुरुआत हुई।

लेकिन जब मुझे वह शब्द मिला, जब मुझे वह समारोह मिला, हम दोनों ने देखा, और हमने प्रार्थना की और कहा, ठीक है, और हमने यहाँ किसी से बात की। यहाँ कोई घर उपलब्ध नहीं था - यहाँ अचानक से यहाँ आने के लिए कुछ भी उपलब्ध नहीं था।

यह लगभग छह महीने के भीतर होने वाला था। लेकिन इससे भी पहले, मेरे यहाँ आने से लगभग एक सप्ताह पहले, एक घर खुला। यह पुराना मेथोडिस्ट पैरिश था।

और हम वहाँ आए, और सिर्फ़ एक बार फिर से पुष्टि के तौर पर, हमने एक परिवार के तौर पर उस स्थानीय व्यक्ति के लिए आवास और रहने के लिए जगह के लिए प्रार्थना की थी, और मेरी सबसे छोटी बेटी एन, जो बहुत ही ज़्यादा ज़िद्दी है, प्रार्थना के बीच में ही उठ खड़ी हुई और बोली कि डैडी क्या हम अपने नए घर में चिमनी लगवा सकते हैं। और मैं उसे नीचे धकेलना चाहता था। मैंने कहा नहीं, ठीक है, हम वास्तव में, उह, आप जानते हैं, उस तरह की विशिष्ट चीज़ों के लिए नहीं पूछ सकते हैं, और चिमनी महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है।

और प्रभु ने मुझसे लगभग इस बारे में बात की और कहा, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई। इसलिए, जब हम यहाँ आए, और हमने पहली बार घर देखा, और हमारे पास यह पहले कभी नहीं था, हम उस घर में चले गए, और वहाँ एक चिमनी थी।

तो, पुष्टि के साथ, यह ऊपर से व्हीप्ड क्रीम की तरह था। हाँ, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई। अच्छा, अच्छा।

ठीक है धन्यवाद। आयत चार और पाँच के अनुसार, परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से क्यों छुड़ाया? उन्हें अपने पास लाने के लिए ताकि वे उसके विशेष खजाने बन जाएँ। अब यह दिलचस्प है कि परमेश्वर ने वास्तव में अब्राहम या याकूब या यूसुफ से ऐसा नहीं कहा।

लेकिन उन दिनों में यह सब इसी बारे में था। यह परमेश्वर के बारे में था कि वह अपने लिए एक लोग चाहता था। मैं तुम्हें चील के पंखों पर सवार होकर अपने पास ले आया।

मुझे लगता है कि कई बार हमारे लिए यह मानना मुश्किल होता है कि परमेश्वर के लिए उसके साथ हमारी संगति कितनी मूल्यवान है। लेकिन यह बताता है कि यही वह बात है जिसके बारे में

हम उसके पास उसकी अनमोल संपत्ति के रूप में आ सकते हैं और उसकी संगति का आनंद ले सकते हैं।

हाँ, हाँ, यह अगला प्रश्न है। यह ठीक है। दुनिया में इस्राएल के उद्देश्य के लिए पद छह के निहितार्थ क्या हैं? दुनिया में इस्राएल के उद्देश्य के बारे में यह क्या कह रहा है? उन्हें मध्यस्थ होना चाहिए।

हाँ, एक पवित्र पुरोहित वर्ग या एक पवित्र राष्ट्र। एक शाही पुरोहित वर्ग। अब यह बहुत दिलचस्प है।

राजसीपन से तात्पर्य राजत्व से है। पुरोहिताई से तात्पर्य सेवा से है। पवित्रता से तात्पर्य अधिकार से है।

हम ईश्वर की संपत्ति हैं और इसलिए, हम उनके चरित्र का हिस्सा हैं। इसलिए एक अर्थ में जब आप इन सभी को एक साथ जोड़ते हैं तो आप मसीहा के सामने आते हैं। एक अर्थ में, इज़राइल ने कभी भी इसे पूरा नहीं किया।

लेकिन मसीहा ने हम सब की खातिर इसे पूरा किया। लेकिन उन्हें पुजारी बनना है। जैसा कि मेल ने कहा, पुजारी होना एक मध्यस्थ होना है।

यह मध्यस्थ बनना है। खैर , किसके लिए मध्यस्थ? दुनिया के लिए? हाँ। उनका चुनाव दूसरों के लिए है।

परमेश्वर उन्हें अपने पास क्यों लाता है? वह उनसे प्रेम करता है। वह उनकी संगति चाहता है। लेकिन क्या वह उनकी संगति से संतुष्ट होगा? नहीं।

वह पूरी दुनिया की संगति चाहता है। और फिर उनका चुनाव एक उद्देश्य के लिए है। तो लेवियों का प्रारंभिक पैटर्न तो है।

हम्म-हम्म। लेवीय इस्राएल के पुजारी हैं, और इस्राएल को दुनिया के पुजारी बनना है। अब, उन्हें वास्तव में निर्वासन के बाद ही यह समझ में आया।

निर्वासन के बाद ही उनके पास कोई राजा नहीं है। उनका कोई स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य नहीं है। उनके पास कोई सेना नहीं है।

और वे कह रहे हैं, हम कौन हैं? खैर, हमें क्या होना चाहिए? और आप एज्रा को यह कहते हुए सुनते हैं कि क्या आपने हाल ही में निर्गमन 19 पढ़ा है? ओह, यह वही है जो हमें शुरू से ही होना चाहिए था। और निर्वासन की आग में वे सभी अन्य चीजें खो बैठे, इससे पहले कि वे सुनने के लिए तैयार हों कि यह किस बारे में है। ठीक है, अब ध्यान दें कि श्लोक पांच और छह एक साथ चलते हैं जैसा कि रॉन देख रहा था।

पाँचवाँ श्लोक कैसे शुरू होता है ? अगर हाँ, तो क्या तुम मेरी आवाज़ मानोगे और क्या? मेरी वाचा को बनाए रखो। तो यहाँ चुनौती है। परमेश्वर तैयारी शुरू कर रहा है और वह यहाँ संज्ञानात्मक रूप से तैयारी शुरू कर रहा है।

वह उन्हें सोचने पर मजबूर कर रहा है। वह उन्हें वाचा को बनाए रखने के लिए प्रेरित कर रहा है और शुरूआती बात पीछे की ओर है। याद रखो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है।

मैंने तुम्हें अपने पास कैसे रखा और फिर आगे बढ़ाया। अगर तुम उस वाचा को निभाओगे जो मैं तुम्हें अगले कुछ दिनों में देने जा रहा हूँ, तो तुम्हारे लिए एक वादा है। इसलिए, वह उन्हें इस बात के बारे में सोचने के लिए कह रहा है।

अब मैं देखता हूँ कि आयत 19 या 6 में, हमें पुस्तक में पवित्र शब्द का दूसरा उदाहरण मिलता है। पहली बार यह अध्याय 3, आयत 5 में आया था। पवित्र भूमि, और अब तुम एक पवित्र राष्ट्र होगे। अब, क्या उस भूमि के बारे में नैतिक रूप से कुछ भी उत्कृष्ट है? नहीं कहो।

हाँ, यह सही है। नहीं, उस आधार पर नैतिक रूप से कुछ भी उत्कृष्ट नहीं है। हम इसके बारे में क्या कह रहे हैं? ईश्वर की उपस्थिति वहाँ थी, और जहाँ ईश्वर की उपस्थिति है, वह सार रूप में पवित्र है क्योंकि ईश्वर का सार पवित्र है।

यहाँ अवधारणा अन्यता की है। ईश्वर सृष्टि में किसी भी अन्य चीज़ से भिन्न है। इसलिए, अक्सर यह कहा जाएगा कि पवित्र का अर्थ है अलग होना, और यह निश्चित रूप से सच है।

यह ज़मीन सामान्य ज़मीन से अलग है। आपके जूतों के तले पर सामान्य ज़मीन है। उस सामान्य ज़मीन को इस ज़मीन के साथ न मिलाएँ जो दूसरी तरह की ज़मीन है।

अपने जूते उतारो। तो, हम यहाँ परमेश्वर के पवित्र सार के बारे में बात कर रहे हैं। परमेश्वर तुम्हारे जैसा नहीं है।

वह मेरे जैसा नहीं है। वह इस दुनिया का हिस्सा नहीं है। वह इस दुनिया से अलग है।

खैर, यहाँ क्या हो रहा है? वह अपने लोगों के साथ रहना चाहता है। वे पवित्र होंगे। ठीक है।

एक बार फिर, यह है कि तुम मेरे होगे, और मेरे होने से तुम दूसरे बन जाओगे। लेकिन अब हम पवित्र सार के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। जैसा कि स्पष्ट हो जाएगा कि हम पवित्र चरित्र के बारे में बात कर रहे हैं।

ईश्वर उन्हें दुनिया से अलग व्यवहार करने के लिए बुला रहा है। दुनिया अपनी जरूरतों, अपनी इच्छाओं और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए खुद को बड़ा करने के लिए जीती है। लेकिन यह एक अलग तरह का राष्ट्र होने जा रहा है।

एक ऐसा राष्ट्र जो खुद को एक राजसी पुरोहिती के हवाले कर देता है। मैं किसी भी तरह से अच्छा नहीं हूँ। मैं कुछ नहीं कर सकता और इसलिए मुझे बस दूसरों के लिए अपना जीवन जीना होगा।

नहीं। यह एक शाही पुरोहित वर्ग है। एक ऐसा पुरोहित वर्ग जो अपनी कीमत जानता है।

कौन जानता है कि उसका क्या स्थान है? कौन जानता है कि उसका क्या मूल्य है और कौन खुशी-खुशी अपने स्वार्थ को छोड़ देता है? दूसरों की खातिर अपनी खुद की बड़ाई करना।

तो, 3:5 और 19:6 में इन दो उदाहरणों में हमें पवित्रता का एक व्यापक दर्शन मिलता है। नहीं। हम अंततः परमेश्वर के सार को साझा नहीं कर सकते।

वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो वास्तव में अन्य है। लेकिन हम उसके चरित्र को साझा कर सकते हैं, और वह चरित्र भी अलग है। इस दुनिया में आत्म-समर्पण करने वाला प्रेम हमेशा अन्य रहेगा।

ईमानदारी झूठ बोलने से मिलने वाली तरक्की की परवाह नहीं करती। इस दुनिया में हमेशा दूसरे लोग होंगे। इसलिए, ये दो घटनाएँ काफी महत्वपूर्ण हैं।

शुरुआत में ही, आप इस तथ्य से निपट लेते हैं कि आप जिस व्यक्ति के साथ काम कर रहे हैं, वह किसी और तरह का प्राणी है। इसे अपने दिमाग में बिठा लें। अब, इस समय, जब वाचा आपके सामने प्रकट होने वाली है, तो यह किस लिए है? यह किस बारे में है? यह आपके चरित्र में दूसरे बनने के बारे में है।

हाँ। जब हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं, तो क्या हम किसी तरह से उसका सार भी साझा नहीं करते? मुझे लगता है कि यह इस अर्थ में बहुत दूर जा रहा है कि आप अभी भी सृष्टि का हिस्सा हैं। आप अभी भी सीमित हैं।

तो, ये सब, आपके पास सर्वज्ञता नहीं है, आपके पास सर्वव्यापकता नहीं है। वे गुण जो ईश्वर को इस दुनिया से अलग करते हैं, वे उसके सार हैं; हमें वह नहीं मिलता। लेकिन उसका चरित्र हमें मिलता है।

ठीक है। तो, जैसा कि मैंने कहा, ये आयतें लोगों को वाचा को स्वीकार करने के लिए संज्ञानात्मक रूप से तैयार करती हैं। सोचिए।

सोचो तुम कहाँ से आये हो। सोचो मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है। सोचो उन अद्भुत वादों के बारे में जो मैंने तुम्हारे लिए किये हैं।

यदि आप अनुबंध स्वीकार करेंगे तो ठीक है। चलिए आगे बढ़ते हैं।

श्लोक 10 से 15. यहाँ तीन काम हैं जो लोगों को करने के लिए कहा गया है। वे क्या हैं? अपने कपड़े धोना।

कपड़े धोओ। बाड़ बनाओ। और क्या? हाँ।

सस्पेंड करो। खुद को हिजड़ा या कुछ और मत बनाओ। इनका क्या महत्व है? वे भगवान के बारे में क्या कह रहे हैं? ठीक है।

वह शुद्ध है। यहाँ जो कुछ हो रहा है, वह तुम्हें अशुद्ध नहीं करेगा। यह तुम्हें अशुद्ध नहीं करेगा, कुछ अन्य गतिविधियों के विपरीत।

पहाड़ के चारों ओर बाड़ बनाओ। वह अलग है। तुम वह नहीं बन सकते।

आप उसमें समाहित नहीं हो सकते या उसे अपने भीतर समाहित नहीं कर सकते। और यह कैसा रहेगा? बुतपरस्त धर्म प्रजनन क्षमता पर केन्द्रित है। हम खुद को पुनरुत्पादित करेंगे।

हम जीवन शक्ति पर नियंत्रण प्राप्त कर लेंगे। और वास्तविक अर्थ में, यह अभिव्यक्ति है कि हम खुद को नकार देंगे क्योंकि हमारे व्यवहार के माध्यम से ईश्वर को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, वास्तविक अर्थ में, यह सब्त के दिन जैसा है।

क्या परमेश्वर चाहता है कि हम काम करना बंद कर दें? नहीं। लेकिन हर सात दिन में, वह चाहता है कि हम खुद को याद दिलाएँ कि यह मेरा काम नहीं है जो मुझे मेरा जीवन देता है। तो, उसी तरह यहाँ भी, परमेश्वर सोचता है कि उसने सेक्स के साथ अच्छा काम किया।

अगर आपके मन में इस बारे में कोई सवाल है, तो सोलोमन का गीत पढ़ें। भगवान यौन-विरोधी नहीं हैं, लेकिन वह यहाँ कुछ समय के लिए कह रहे हैं, खुद को याद दिलाएँ कि आपके अंदर जीवन शक्ति नहीं है। आप शब्द के पूर्ण, सच्चे अर्थ में खुद को पुन: पेश नहीं कर सकते।

ठीक है, अब मैंने कहा कि पहली तैयारी संज्ञानात्मक थी। यह तैयारी क्या है? नहीं, नहीं। हाँ, यह शारीरिक तैयारी है।

यह क्रियाएँ हैं। और तकनीकी शब्दावली है इच्छाशक्ति। पहला शब्द किसी ऐसी चीज़ के बारे में है जिसके बारे में सोचना है।

यह कुछ करने के बारे में है। और वास्तविक अर्थ में, यह विचार है कि यहाँ, छोटे-छोटे कदमों में, भगवान कह रहे हैं, यह करो, और तुम यह करो। उन्हें कुछ दिनों बाद के लिए तैयार करना जब भगवान एक बड़े पैकेज में कहेंगे, यह करो।

और वे तैयार हैं, इसलिए वे हाँ कहते हैं। ठीक है, तो संज्ञानात्मक, इच्छाशक्ति। अब, अगला पैराग्राफ़ देखें।

जब मैं घड़ी देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि हम मुश्किल में हैं। अगला पैराग्राफ, जिसका मैं आपको उत्तर देने जा रहा हूँ, भावात्मक भावनाओं के बारे में है। उस पर गौर करें।

तीसरे दिन की सुबह, गरज और बिजली चमकने लगी, पहाड़ पर घना बादल छा गया और तुरही की बहुत तेज़ आवाज़ हुई जिससे छावनी में मौजूद सभी लोग काँप उठे। तब मूसा लोगों को छावनी से बाहर ले आया ताकि वे परमेश्वर से मिल सकें और वे पहाड़ की तलहटी में खड़े हो गए। सिनाई धुएँ में लिपटा हुआ था क्योंकि प्रभु उस पर आग में उतरे थे।

धुआँ शिकार के धुएँ की तरह ऊपर उठा और पूरा पहाड़ बुरी तरह काँप उठा। जैसे-जैसे तुरही की आवाज़ तेज़ होती गई, मूसा बोला और परमेश्वर ने गरज के साथ उत्तर दिया। भावनाएँ, होश।

इसलिए, परमेश्वर को पूरे व्यक्ति की चिंता है। संज्ञानात्मक रूप से, वह इस बारे में चिंतित है कि हम कैसे सोचते हैं। इच्छाशक्ति से, वह इस बारे में चिंतित है कि हम क्या करते हैं और हम काम और गतिविधि में खुद को कैसे शामिल कर सकते हैं।

और वह इस बात से चिंतित है कि हम क्या देखते हैं, क्या सुनते हैं, क्या सूंघते हैं, क्या महसूस करते हैं। इसलिए, एक उल्लेखनीय समग्र तरीके से, परमेश्वर लोगों को इस अद्भुत घटना के लिए तैयार कर रहा है जो होने वाली है। खैर, ऐसा लगता है कि इस सब में, वह उन्हें आध्यात्मिक और शारीरिक सीमाएँ दे रहा है।

और फिर ये दो तरह की सीमाएँ उन्हें दस आज्ञाओं के लिए तैयार करती हैं क्योंकि हम देखते हैं कि ये सीमाएँ दस आज्ञाओं में दी गई हैं। हाँ, हाँ। आध्यात्मिक उपासना से संबंधित है और फिर दूसरी मानव जाति से संबंधित है।

हां, आध्यात्मिक और भौतिक और एक तरह से आध्यात्मिक और भौतिक तीनों ही इसमें शामिल हैं। लेकिन भगवान, कभी-कभी हम सुझाव देते हैं कि भगवान वास्तव में केवल आध्यात्मिक घटक में रुचि रखते हैं। और यह सच नहीं है।

भगवान हमारे अस्तित्व के हर पहलू के बारे में चिंतित हैं। उन्होंने हमें बनाया है, और इसलिए वह परवाह करते हैं। इसलिए, जब हम पूजा केंद्रों को भव्य बनाने का प्रयास करते हैं, तो अक्सर एनाबैप्टिस्ट परंपरा में, जिससे मेरा परिवार आया था, अक्सर इसका उत्तर नहीं होता।

आपको सभी दिखावटीपन को नष्ट करना होगा। खैर, हाँ, यह निश्चित रूप से सीमा से बाहर जा सकता है। यह गलत दिशा में जा सकता है।

लेकिन भगवान सुंदरता की हमारी ज़रूरत को समझते हैं, और वह प्यार की अभिव्यक्ति के रूप में चीज़ों को सुंदर बनाने की हमारी ज़रूरत को समझते हैं। तो, ये सभी अपने उचित स्थान पर हैं। क्या वह पहले जो कहा था, उसे भी नहीं जोड़ रहा है, कि मैं भगवान हूँ और मेरे साथ खिलवाड़ मत करो।

आप मध्यस्थ हो सकते हैं, लेकिन हम वैसे नहीं हैं। यह सही है। हम छोटे देवता नहीं हैं।

यह बिलकुल सही है। और यह बुतपरस्ती के सामने है, क्योंकि बुतपरस्ती असल में हमारे और ईश्वर के बीच की दूरी को मिटाने की कोशिश करती है, ताकि हम ईश्वर बन सकें और इस तरह ईश्वर को नियंत्रित कर सकें, बिना खुद पर अपना नियंत्रण छोड़े। बुतपरस्ती का यही लक्ष्य है।

और भगवान कहते हैं, नहीं, तुम मुझे नियंत्रित नहीं कर सकते। वास्तव में, यदि तुम मुझे नियंत्रित करने की कोशिश करोगे, तो तुम खुद को नष्ट कर दोगे। पहाड़ के पास मत आओ।

और यह दिलचस्प है, मैंने आखिरी श्लोक में सवाल पूछा था जहाँ मूसा भगवान के पास जाता है, और भगवान कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि तुम वहाँ वापस जाओ और उससे कहो कि वह उस बाड़ के पार न जाए। और मूसा कहता है, भगवान, हमने बाड़ बनाई है। वे तुमसे बहुत डरते हैं।

वे बाड़ के पार नहीं जा रहे हैं। नीचे जाओ और उससे कहो कि वह बाड़ को पार न करे। यह गंभीर मामला है।

गंभीर मामला। ठीक है। अध्याय 20, श्लोक 1, परिचय है, और परमेश्वर ने ये सभी शब्द कहे हैं।

अध्याय 20, श्लोक 2, ऐतिहासिक प्रस्तावना है। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जिसने तुम्हें टार से बाहर निकाला। नहीं, नहीं, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जिसने तुम्हें गुलामी से बाहर निकाला।

कुल मिलाकर 180 डिग्री का अंतर है। मैं तुम्हारा राजा हूँ जिसने तुम्हें हराया है और तुम मेरे गुलाम हो। और यह वह वाचा है जिसे तुम स्वीकार करने जा रहे हो।

मैं वह ईश्वर हूँ जिसने तुम्हें गुलामी से मुक्त किया है और मैं तुम्हें अपने साथ एक वाचा में आमंत्रित करता हूँ। मैं तुम्हें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। अगर मैंने तुम्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया, तो यह किसी काम का नहीं होगा।

इसलिए, मैं आपको आमंत्रित करता हूँ। मैंने आपको उस स्थान पर लाने के लिए जो कुछ भी कर सकता था, वह किया है जहाँ आप हाँ कहना चाहते हैं। लेकिन इस नए रिश्ते के पीछे जो इतिहास है, वह मुक्ति का इतिहास है।

अब, दस आज्ञाओं में जो कुछ है, वह यह है कि मेरे पास शर्तों का संक्षिप्त रूप है। यह वही है जिस पर आप मेरे साथ इस वाचा में सहमत होने जा रहे हैं। फिर हमारे पास एक अंतराल है जिसके बारे में हम अगले सप्ताह बात करेंगे और फिर हमारे पास लंबा रूप है।

अब लघु और दीर्घ रूप के बीच अंतर यह है कि दीर्घ रूप विशिष्ट मामलों में व्यक्त किया जाता है। यदि तब। यदि ऐसा होना चाहिए, तो आपको यही करना चाहिए।

अब, प्राचीन दुनिया भर में कानून संहिताओं को इसी तरह से लिखा जाता था। लेकिन अनुबंध का स्वरूप आपको कुछ और करने की अनुमति देता है। और यह, अगर आप चाहें तो, हम्मुराबी की संहिता या सुमेरियन उर-नामू या बाकी सभी के बराबर है।

मुख्य बात यह है कि इसे परमेश्वर के साथ वाचा के संदर्भ में रखा गया है। अब मैं अगले सप्ताह इसके बारे में और अधिक बताऊँगा। एक वाचा जो दिलचस्प काम कर सकती है वह यह है कि ये पूर्ण निषेध या आदेश हैं।

ये व्यावहारिक हैं, अगर आप चाहें तो। ये सिद्धांत हैं। ये मामले इन शाश्वत सिद्धांतों से निकले हैं।

और जैसा कि मैंने कहा, वे सिद्धांत महान राजा के चरित्र में निहित हैं। आपको बिंगो करना चाहिए। आपको बिंगो नहीं करना चाहिए।

कोई अगर, कोई और, कोई लेकिन नहीं। यह ऐसा ही है। ठीक है, इन आज्ञाओं में से कितनी, ये संक्षिप्त सिद्धांत जो बाकी सभी के लिए आधार हैं, उनमें से कितनी का संबंध ईश्वर से है? उनमें से चार का संबंध ईश्वर से है।

अब मुझे लगा कि शायद आप में से कुछ लोग कहेंगे, कोई कहेगा कि सभी दस, और यह ठीक होगा। लेकिन उनमें से चार विशेष रूप से भगवान से संबंधित हैं। इसका मतलब है कि चूँकि हम सभी बुनियादी अंकगणित कर सकते हैं, इसलिए छह ऐसे हैं जिनका संबंध अन्य मनुष्यों से है।

अब, एक मिनट रुकिए। यह परमेश्वर के साथ एक वाचा है। यहाँ क्या हो रहा है? क्या प्रकट हो रहा है? परमेश्वर का चरित्र।

अगर तुम मेरे साथ रिश्ते में रहने जा रहे हो, तो तुम दूसरे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हो, यही इस बात की कुंजी है कि तुम मेरे साथ रिश्ते में हो या नहीं। वाह। वाह।

मुझे एक कोठरी में रहने दो, और मैं सबसे पवित्र आदमी बन जाऊंगा जिसे तुमने कभी देखा है। यह सिर्फ तुम्हारे जैसे लोगों के साथ रहना है जो इसे इतना कठिन बनाता है। मुझे समझ में नहीं आता।

तो, यह सिर्फ़ दूसरे लोगों की बात नहीं है, यह सिर्फ़ पड़ोसियों की बात नहीं है, जो आपकी तरह ईश्वर में विश्वास करते हैं, बल्कि आप सभी की बात है। बिल्कुल। बिल्कुल।

हाँ। मुझे लगता है कि इसकी शुरुआत दूसरे समुदायों से होनी चाहिए। तुम्हें हत्या नहीं करनी चाहिए।

पूर्ण विराम। तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। पूर्ण विराम।

तो हाँ। हाँ। अब, आइए उन पहले चार के बारे में बात करते हैं।

पहला क्या कहता है? सिर्फ़ भगवान की पूजा करो। दूसरा क्या कहता है? कोई मूर्ति नहीं। और क्या हम इस पर थोड़ा और विस्तार से बता सकते हैं? उन्हें क्या नहीं करना चाहिए? हाँ।

सृष्टि के रूप में ईश्वर को मत बनाओ। तीसरा क्या कहता है? ईश्वर के चरित्र, स्वभाव और कार्य को खोखला मत बनाओ। वह चरित्र, स्वभाव और कार्य नाम हैं।

क्योंकि मेरी तीन माताएँ थीं: मेरी दो बड़ी बहनें, जो मुझसे नौ और दस साल बड़ी थीं, और फिर मेरी जन्म देने वाली माँ। मैं एक बहुत ही नैतिक लड़का था। मैं गाली नहीं देता था, और अगर खेल के मैदान में मेरे दोस्त गाली देते तो मुझे लगभग बीमार कर देता था।

इसलिए, मुझे तीसरी आज्ञा के बारे में बहुत अच्छा लगा। फिर, मैं बड़ा हुआ और मैंने कुछ सीखा। जब भी आप किसी आज्ञा के बारे में अच्छा महसूस करते हैं, तो आप उसे समझ नहीं पाते।

आज्ञाएँ हमें अच्छा महसूस कराने के लिए नहीं दी गई थीं, बल्कि वे हमें क्रूस की ओर ले जाने के लिए दी गई थीं। इसलिए, हम केवल एक आकस्मिक शपथ में भगवान के नाम का उपयोग करने के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। भगवान की कसम, मैं करूँगा, जब आपका ऐसा करने का कोई इरादा नहीं है।

यह सब इसमें शामिल है। लेकिन परमेश्वर को खोखला दिखाने के और भी कई तरीके हैं। उसका नाम मूल्यहीन है।

मुझे कबूल करना होगा कि मैं टेक्स्ट मैसेज से बहुत परेशान हूँ। हे भगवान। मैंने ईसाई किशोरों को ऐसा कहते सुना है।

क्या यह भगवान का नाम व्यर्थ लेना है? हाँ, यह है। यह भगवान के किसी भी वास्तविक मूल्य को खत्म करना है। हे भगवान।

नहीं, नहीं। उन्होंने यह दूसरों से सीखा है। इसलिए, उसे खाली करने के बहुत सारे तरीके हैं।

और फिर चौथे के बारे में क्या? हमारा समय भगवान का है, और हम इसे इस बात से दिखाते हैं कि हम इसके सातवें हिस्से के साथ क्या करते हैं। अपने समय के सातवें हिस्से के साथ हम जो करते हैं, उससे हम अपने पूरे समय को पवित्र करते हैं।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि अगर हम सब्त के दिन पवित्र काम करते हैं, तो हम बाकी छह दिनों में अपवित्र काम कर सकते हैं और यह ठीक है। बिलकुल नहीं। लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि अगर मैं हर सात दिन रुककर सोचूँ कि मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का स्रोत कौन है? मेरी ज़रूरतों की पूर्ति कौन करता है? अगर मैं हर सात दिन रुककर इस बारे में सोचूँ, तो मैं बाकी छह दिनों का इस्तेमाल इस बात को ध्यान में रखकर करूँगा कि वह कौन है और मैं कौन हूँ।

अब यहाँ परमेश्वर जो कर रहा है वह यह है कि वह कुछ बहुत ही गहन सत्य सिखा रहा है। यहाँ वह एकेश्वरवाद सिखा रहा है। मैंने यह पहले भी कहा है, मैं इसे फिर से कहूँगा।

दुनिया में सिर्फ़ तीन एकेश्वरवादी धर्म हैं। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम। और इन तीनों को यह सब एक ही स्रोत से मिला है।

आप लगभग यही सोचेंगे कि एकेश्वरवाद का पता चल गया है, है न? अगर आपको ज़्यादा जानकारी न हो। मानवविज्ञानी हमें बताते हैं, ओह हाँ, हाँ, जब लोग समझदार हो जाते हैं तो वे स्वाभाविक रूप से एक ईश्वर को समझने लगते हैं। नहीं, वे ऐसा नहीं समझते।

मिस्र के लोग दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोग थे। आज के भारतीय बुद्धिमान लोग हैं। और वे मिस्र और हिंदू हैं, उग्र बहुदेववादी।

नहीं, आप सिर्फ़ तर्क करके एकेश्वरवाद तक नहीं पहुँच सकते। ईश्वर इस दुनिया में नहीं है। ऐसे कितने धर्म हैं जो मूर्ति बनाने से इनकार करते हैं? वही तीन।

सिर्फ़ ये तीन। और उन्हें यह एक ही जगह से मिला। अब, आप देखिए, भगवान यहाँ किसी बड़े दार्शनिक तर्क में नहीं जाते।

वह कहता है, क्या तुम मेरे साथ वाचा बाँधना चाहते हो? और वे कहते हैं, हाँ, हाँ, हमने देखा कि तुमने मिस्रियों के साथ क्या किया। हाँ, हम तुम्हारे साथ वाचा बाँधना चाहते हैं। और वह कहता है, अच्छा।

फिर, आप किसी अन्य देवता को नहीं पहचान सकते। वह इस बिंदु पर यह नहीं कहता कि कोई अन्य देवता नहीं है। वह बस इतना कहता है, व्यावहारिक रूप से, यदि आप मेरे लोग बनने जा रहे हैं, तो मैं ही एकमात्र ईश्वर हूँ जिसे आप पहचान सकते हैं।

और करीब एक हजार साल बाद, एबी ने ज़ेके को कोहनी मारी और कहा, ज़ेके, ज़ेके, मैं शर्त लगाता हूँ कि कोई और देवता नहीं है। और ज़ेके कहता है, वाह, मैं शर्त लगाता हूँ कि तुम सही हो। यहाँ भी वही बात है।

पारलौकिकता। ईश्वर यह संसार नहीं है। और आप इस संसार के माध्यम से उसे नियंत्रित नहीं कर सकते।

यह दुनिया की एकमात्र किताब है जो यह सिखाती है। एक जटिल दार्शनिक अवधारणा के बारे में बात करें। अरस्तू, सुकरात और प्लेटो ने इसके साथ संघर्ष किया।

ये गुलाम हैं। तो भगवान क्या कहते हैं? आप मुझे इस धरती पर किसी भी चीज़ के रूप में नहीं बना सकते। और लगभग एक हज़ार साल बाद, एबी ज़ेके को कोहनी मारता है और कहता है, ज़ेके, ज़ेके, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि भगवान इस दुनिया में नहीं हैं।

और ज़ेके कहते हैं, ओह, यह बहुत गहरी बात है। भगवान उन्हें बहुत गहरी सच्चाई सिखा रहे हैं। आप उनके नाम के ज़रिए उन्हें प्रभावित नहीं कर सकते, और आप उनके नाम का इस्तेमाल अपनी खुद की शान के लिए नहीं कर सकते।

वह समय का लेखक है। सारा समय उसका है। वाह।

स्टीफन हॉकिंग अभी भी यह नहीं समझ पाए हैं कि समय क्या है। तो, यह बात समझ में आ गई। चार बातें समय के बारे में कुछ मुख्य सिद्धांत स्थापित करती हैं।

परमेश्वर के सार के बारे में। उसके स्वभाव के बारे में। और फिर छह ऐसे हैं जो हमें उसके व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताते हैं।

वह परिवार को महत्व देता है। अपने पिता और माता का सम्मान करो। कुछ याद है? तुमने खुद को नहीं बनाया।

आप स्वयं अस्तित्ववान नहीं हैं। आप एक उपहार हैं। प्रेम का उपहार।

हालाँकि, अपूर्ण रूप से, उन्होंने प्यार किया होगा। आप एक उपहार हैं। इसे मत भूलना।

इसका मतलब है कि परिवार में आपको ऐसा व्यक्ति बनना चाहिए जिसका आपके बच्चे सम्मान कर सकें। अपने पिता और माता का सम्मान करें। बस इतना ही कहा गया है।

ताकि आप इस देश में लंबे समय तक रह सकें, यहाँ दोनों तरफ़ से परिवार के सम्मान और आदर की परंपरा है। परमेश्वर परिवारों को महत्व देता है।

क्यों? क्योंकि वह रिश्तों को महत्व देता है। इसीलिए। जैसा कि मैंने कहा, आप और मैं अकेले नहीं हैं।

हम अकेले नहीं रह सकते। और जैसा कि मैं लोगों को बताता हूँ, मेरे सभी मूल विचार या तो सीएस लुईस या डेनिस किनलॉ से आते हैं। डॉ. किनलॉ के अवलोकनों में से एक, आप जानते हैं, उन चीजों में से एक है जो आप हमेशा से जानते हैं और फिर भी कभी नहीं सोचा।

मान लीजिए कि कोई अंतरिक्ष यान पृथ्वी पर आया और उसका उद्देश्य मानवता का अध्ययन करना था। और वे हममें से किसी एक को ले गए। वे गलत होंगे, है न? क्योंकि मानवता दो भागों में विभाजित है।

अगर आप कभी भी मानवता को समझना चाहते हैं तो आपको एक पुरुष और एक महिला को साथ रखना होगा। हमारी संस्कृति इससे नफरत करती है। इससे नफरत करती है।

उसे यह भी नहीं पता कि वह उससे नफरत करता है, लेकिन वह करता है। मैं अपने आप में पूर्ण हूँ, और मुझे किसी औरत की ज़रूरत नहीं है।

मैं अपने आप में संपूर्ण हूँ, और मुझे किसी पुरुष की ज़रूरत नहीं है। अब, अगर आप यहाँ सिंगल हैं, तो मैं एक पल के लिए भी यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि आप किसी तरह से दोषपूर्ण हैं। बिलकुल नहीं।

बिलकुल नहीं। लेकिन मैं मानवता के बारे में परमेश्वर के समग्र दृष्टिकोण के बारे में बात कर रहा हूँ। हम उस रिश्ते के बिना पूरी तरह से इंसान नहीं हो सकते।

उसने हमारे साथ ऐसा किया। पुरुष मंगल ग्रह से हैं, महिलाएं शुक्र ग्रह से हैं। उसने हमारे साथ ऐसा किया।

फिर से, यह डेनिस किनलॉ का है। उन्होंने कहा कि एल्सी और मैं 52 साल से साथ रह रहे हैं; मुझे लगता है कि यह उस समय था जब मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना था। अगर आप मुझसे पूछें कि वह आगे क्या करने जा रही है, तो मैं आपको बहुत करीब से बता सकता हूँ।

अगर आप मुझसे पूछें कि वह ऐसा क्यों करने जा रही है, तो भगवान ने हमारे साथ ऐसा किया है। हमें एक दूसरे की ज़रूरत है। परिवार।

आपको हत्या नहीं करनी चाहिए, और शब्द है हत्या। यह जरूरी नहीं कि युद्ध के बारे में कोई कथन हो। इसलिए, किंग जेम्स यूनियन, आपको हत्या नहीं करनी चाहिए, थोड़ा भ्रामक है।

यह हत्या के लिए एक अलग हिब्रू शब्द है। जहाँ एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को पूर्व-योजना के तहत मार डालता है, क्योंकि हत्यारे को कुछ फायदा होता है। भगवान मानव जीवन को महत्व देते हैं।

तुम व्यभिचार नहीं करोगे। और मुझे पूरा भरोसा है कि उसने कामुकता की उस अभिव्यक्ति को जानबूझकर चुना है। वह कुछ नहीं कहता, और तुम्हें बस यहाँ मुझे थोड़ी ढील देने की ज़रूरत है।

वह यह नहीं कहता कि आपको समलैंगिक व्यवहार नहीं करना चाहिए। वह यह नहीं कहता कि आपको व्यभिचार नहीं करना चाहिए। वह यह नहीं कहता कि आपको वेश्यावृत्ति नहीं करनी चाहिए।

अब, बाइबल में अन्य स्थान भी हैं जहाँ ये बातें स्पष्ट रूप से बताई गई हैं। वे निषिद्ध हैं। लेकिन यहाँ उन्होंने इस सिद्धांत के लिए जो चुना है, जिस पर सभी कामुकता टिकी हुई है, वह है व्यभिचार।

क्यों? क्योंकि यह रिश्ते में विश्वास को तोड़ता है। यह कोई अफेयर नहीं है। मुझे याद है कि बचपन में मैं अपने पिता से यह समझाने की कोशिश करता था कि इस तरह के व्यवहार को व्यभिचार क्यों कहा जाना चाहिए।

वह बहुत सफल नहीं था। लेकिन यह सच है। कामुकता का उद्देश्य संबंध बनाना है।

और कामुकता का कोई भी उपयोग जो उस रिश्ते को नकारता है, एक त्रासदी है। लेकिन विशेष रूप से, यह अभिव्यक्ति जो विश्वास को तोड़ती है, अगर आप कहना चाहते हैं, तो सबसे बुरी बात है। हाँ।

कार की पिछली सीट पर दो गर्म खून वाले बच्चे अच्छे नहीं हैं। लेकिन भगवान को इस बात की उतनी चिंता नहीं है जितनी उस 50 वर्षीय व्यक्ति की है जो कहता है, अच्छा, माँ के फेंडर में कुछ डेंट हैं। मुझे लगता है कि मैं इनमें से एक नया मॉडल खरीद लूँगा।

कई साल पहले, मैंने एक आदमी को अपनी पत्नी की मौजूदगी में यह कहते हुए सुना था, और उसने कहा, बस्टर, वे नए मॉडल नहीं बनाते हैं जैसे वे पुराने बनाते थे। फिर उसने उसे मारा। हाँ, फिर उसने उसे मारा, हाँ।

लेकिन यह सच है। ईश्वर हमारी कामुकता को रिश्तों के संदर्भ में महत्व देता है, वह सब बनने के लिए जो हमें बनना चाहिए। तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए।

भगवान व्यक्तिगत संपत्ति को महत्व देते हैं। एक व्यक्ति के रूप में, आप मूल्यवान हैं, और आपके पास जो कुछ है वह आपका है। आपको अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।

मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। वह यह नहीं कहता कि, और तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए। यह मेरे बारे में है।

खैर, मैंने बिल्कुल झूठ नहीं बोला। मैंने पूरी तरह से गलत धारणा दी, लेकिन मैंने वास्तव में झूठ नहीं बोला। भगवान कहते हैं, इससे दूर हो जाओ।

आपने अपने पड़ोसी के बारे में गलत धारणा दी है। और मेल, मुझे लगता है कि यहाँ पड़ोसी का मतलब अच्छे सामरी से है। मेरा पड़ोसी कौन है? आपको कभी भी यह विश्वास नहीं करना चाहिए कि आपके पड़ोसी की चीज़ें आपको खुश कर सकती हैं।

सामान वह नहीं है जिसके बारे में यह है। इसलिए, आपके धैर्य के लिए धन्यवाद। हम इस बिंदु पर रुकेंगे।

लेकिन ये सिद्धांत हैं, और बाकी सब कुछ जो इन सिद्धांतों से आगे बढ़ने वाला है। और परमेश्वर कहता है कि आप कभी भी, किसी भी परिस्थिति में ऐसा नहीं करेंगे। और फिर से, मैं उस झूठी गवाही वाली बात के बारे में एक और बात कहूँगा।

कोरी टेन बूम के बारे में सोचो। उसके तहखाने में यहूदी हैं। एसएस सैनिक दरवाज़ा खटखटाता है।

क्या आपके यहाँ कोई यहूदी है? नहीं, सर। बहुत से लोग कहते हैं, अच्छा, यह नैतिक रूप से गलत है। उसने झूठ बोला।

उसने अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही नहीं दी। खैर, आप इस बारे में सोच सकते हैं। भगवान आपका भला करे।

हम अगले सप्ताह इस पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 10, निर्गमन 19-20 है।